इक्कीसवीं सदी के निरक्षर

डॉ. स्कन्द शुक्ल

इक्कीसवीं सदी के निरक्षर

लेखक: डॉ. स्कन्द शुक्ल

ई-प्रकाशन: 2019

सभी चित्र इन्टरनेट से साभार.

लेखक

डॉ .स्कन्द शुक्ल

22 सितम्बर 1979 को राजापुर, बान्दा में जन्म. वर्तमान में लखनऊ में गठिया-रोग विशेषज्ञ के रूप में कार्यरत. वृत्ति से चिकित्सक होने के कारण लोक-कष्ट और उसके निवारण से सहज जुड़ाव. साहित्य के प्रति गहन अनुराग आरम्भ से. अनेक कविताएँ-कहानियाँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित. साथ ही दो उपन्यास 'परमारथ के कारने' और 'अधूरी औरत' भी. सामाजिक मीडिया पर भी अनेकानेक विज्ञान-स्वास्थ्य-समाज-सम्बन्धी लेखों-जानकारियों के माध्यम से वैज्ञानिक चेतना के प्रचार-प्रसार में सक्रिय.

"इक्कीसवीं सदी के निरक्षर वे नहीं होंगे, जो लिखना-पढ़ना नहीं जानते; बल्कि वे होंगे जो सीखना-भूलना और पुनः सीखना नहीं कर पाते।"

- एल्विन टॉफ्लर

विज्ञान के ढेरों रहस्यों से भारत की अधिसंख्य जनता (विशेषकर हिन्दी-पट्टी के लोग) अनभिज्ञ हैं। ऐसे में अनेक बार जब उनके सामने कोई वैज्ञानिक खोज प्रस्तुत की जाती है, तो दो व्यवहार देखने को मिलते हैं। पहले के अन्तर्गत लोग उसे सामान्य ज्ञान की तरह ग्रहण करते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। जैसे भारत की राजधानी दिल्ली है, नियाग्रा जल-प्रपात अमेरिका में है, कंगारू ऑस्ट्रेलिया में मिलता है, उसी तरह वैज्ञानिक ज्ञान भी बिना किसी चिन्तन को स्टिम्युलेट किये उसकी मस्तिष्कीय फर्श पर यों पड़ता है, ज्यों पत्थर पर पानी। बूँद भर भी जल भीतर नहीं जाता, तनिक-भर भी पत्थर पसीजता नहीं ! इन लोगों के लिए विज्ञान की बातें मात्र रोचक जानकारी हैं, जिनसे रत्ती-भर भी जीवन बदलने-वदलने वाला नहीं।

दूसरे वे लोग हैं, जो अर्थ का अनर्थ करने बैठ जाते हैं। वे अभिधात्मक वैज्ञानिक खोजों को धर्मग्रन्थों की लाक्षणिक बातों से जोड़कर यह सिद्ध करने में एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा देते हैं कि वैज्ञानिक खोजे हुए को पुनः खोज रहे हैं।

इन लोगों के अनुसार विज्ञान कुछ भी नया नहीं दे रहा। वह ज्ञात और विस्मृत को पुनर्ज्ञात कर रहा है। बस!

इतनी ही उसकी योग्यता है! सो हर धर्मजीवी के अनुसार सब-कुछ खोजा जा चुका है और आज का मनुष्य चाहे कुछ भी कर ले, वह अपने पूर्वजों से बेहतर तो दूर, उन-सा भी कभी हो न सकेगा!

आज का ज़माना जंक फूड का है। भोजन के मामले में जिह्वा-लोलुपता दिखायी जाएगी, स्वास्थ्य को हानि पहुँचेगी। स्वाद को पोषण के ऊपर तरजीह मिलेगी, सेहत का कबाड़ा होगा। उसी तरह सूचना-वर्षण का यह दौर जंक इन्फॉर्मेशन का भी है। लोग जो पढ़ रहे हैं, बहुधा कचरा है। उस कचरे में से उन्हें सुस्वादु नहीं, सुपोष्य भोज्य चुनना है। उसे ग्रहण करना है। ऐसे में स्वाद-पुष्टि अगर दोनों मिल सकें, तो कहना ही क्या! फिर तो तुष्टि उत्तम हुई!

जंक फ़ूड खाने वाले की सेहत का सत्यानाश तय है। उसी तरह जंक जानकारी पढ़ने वाले के दिमाग़ का भी दिवाला निकलना पक्का है। जानकारियाँ भी मस्तिष्क के भीतर अपना अंकन छोड़ती हैं, जिस तरह जीवन के अनुभव छोड़ते हैं। हर नयी बात, हर नया ज्ञान, हर नया सम्बन्ध, हर नया मेल-बिछोह मस्तिष्क में खचित होता
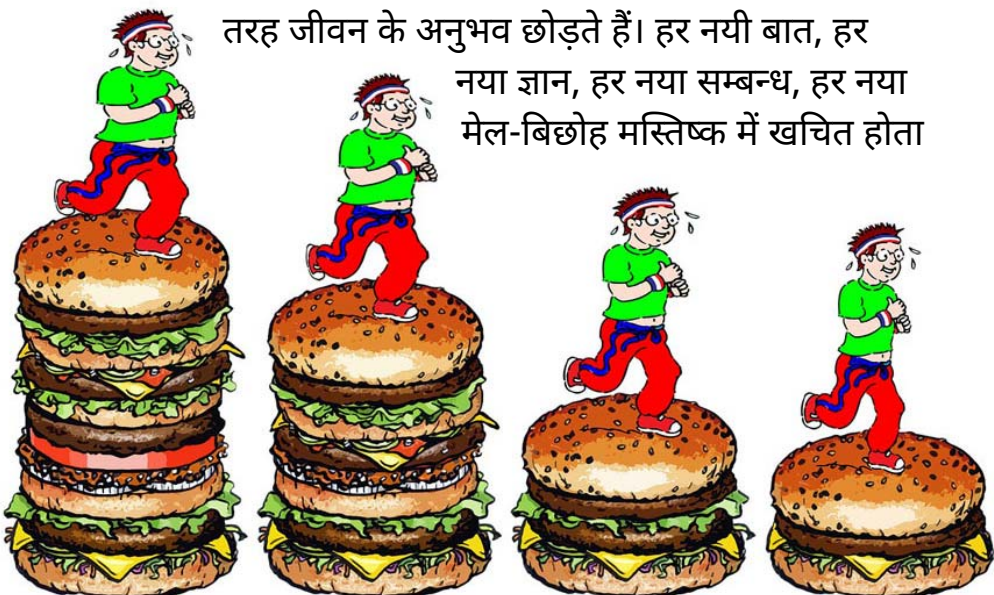
उसे नित्य बदलता रहता है। मस्तिष्क केवल चोट लगने से, रक्तसंचार रुकने से या ट्यूमर होने से बीमार नहीं पड़ता; जंक सूचनाओं को पढ़ने से भी वह रोगी हो जाता है।
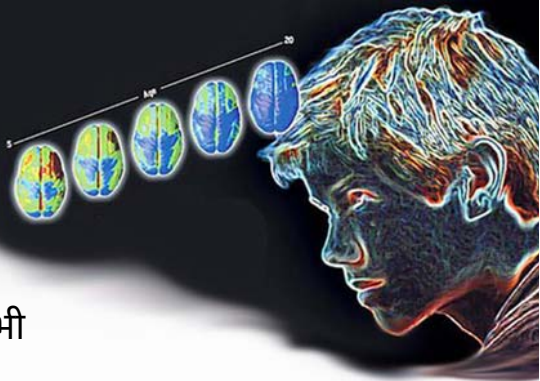
जब कुछ नया सीखा जाता है, मस्तिष्क की कोशिकाएँ न्यूरॉन परस्पर सम्पर्क साधती हैं, जिन्हें साइनैप्स कहते हैं। हर नयी घटना, हर नया व्यक्ति, हर नया आचार, हर नया विचार पुराने सायनैप्सों को कभी मज़बूत करता है अथवा कभी कमज़ोर। हम मनुष्य आजीवन बदलते मस्तिष्कों को लिये जीवन जीते चले जाते हैं। ऐसे में अगर कोई इंसान यह सोचता है कि शिक्षा अच्छी ही होती है, तो यह वैसी ही बात हुई कि हर भोजन हमेशा पौष्टिक ही होता है।
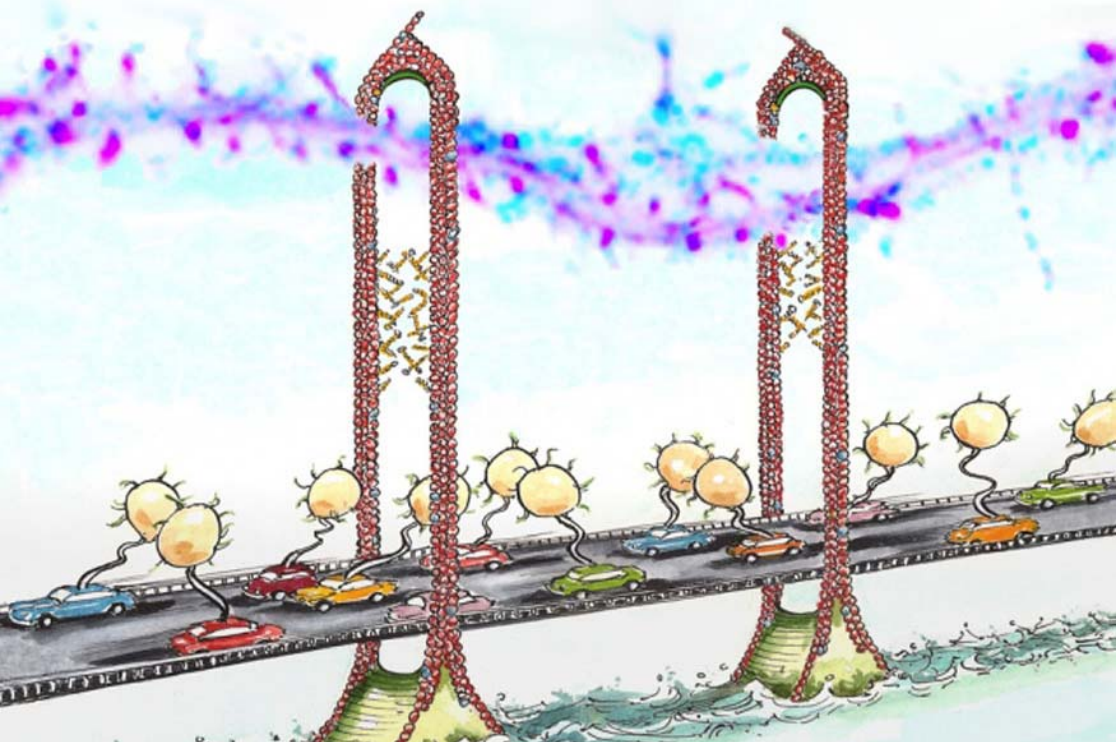
जितना जंक पढ़ेंगे, उतना और उसकी लत पड़ेगी। जंक आपको अपनी ओर खींचेगा। वह स्वाद का ऐसा जिह्वामोही है, कि आप रुक न सकेंगे। ऐसे में कभी आपको ढंग का समझदारी पूर्ण ज्ञान कहीं मिलेगा भी, वह बेस्वाद लगेगा! छिः! दाल-चावल भी कोई खाता है हरी सब्ज़ी के साथ! चलो बर्गर ऑर्डर करते हैं!

सूचना का यह युग ज्ञान के मैक्डॉनल्डीकरण का युग है। आपको फ़ास्टफ़ूड का दीवाना बनाने के जतन जारी हैं, आपको हर हाल में स्वपाकी बने रहना है। सही स्रोत चुनने हैं, उन्हें ठीक से पढ़ना है। फिर अपनी समझ का भोजन अपनी दिमाग़ी आँच पर स्वयं पकाना है। वही आपकी शिक्षा है, जो आपको बदलेगी और बेहतर बनाएगी।

याद रखिए!

आपके पास एक ही मस्तिष्क है और एक जीवन। जंक खाने में और जंक सीखने में उसे बर्बाद मत करिए।